पढ़ना–लिखना और दीवार पत्रिका

संगीता फरासी

शुरुआती कक्षाओं में पढ़ना-लिखना सिखाना चुनौती भरा कार्य होता है। यदि पढ़ना-लिखना सिखाना परम्परागत तौर-तरीक़ों से हो रहा हो और वह बच्चों के सन्दर्भ से जुड़ा न हो तो यह चुनौती और भी बड़ी दिखाई पड़ती है। लेख में कुछ ऐसे तरीक़े सुझाए गए हैं जो शिक्षण को बच्चों की भागीदारी से अर्थपूर्ण बनाने का नज़रिया देते हैं। ख़ासकर 'दीवार पत्रिका' के माध्यम से यह सब कैसे किया जा सकता है, इन प्रयासों के बारे में लेख में विस्तार से चर्चा की गई है। इन कोशिशों में आने वाली चुनौतियों का भी ज़िक्र है। सं.

शुरुआती कक्षाओं यानी प्राथमिक स्तर पर बच्चों को पढ़ना-लिखना सिखाना, स्वयं में एक चुनौतीभरा कार्य है। इस स्तर पर बच्चों के अपने सन्दर्भ होते हैं, जिन्हें वे विद्यालयी प्रक्रियाओं या पाठ्यपुस्तकों में ढूँढ़ रहे होते हैं। जब उनके सन्दर्भों का जुड़ाव हमारी शिक्षण प्रक्रियाओं से नहीं हो पाता तो इसके परिणाम हमें विविध रूपों में दिखते हैं, जैसे किताबों के प्रति उनका रुझान कम होना, पढ़ने-लिखने को बोझ समझना, कक्षा में ध्यान न देना, दूसरों को ध्यान से न सुनना, यानी कुल मिलाकर बच्चों की पढ़ने में अरुचि।

उपर्युक्त के उपचार हेतु मैं 'दीवार पत्रिका' का प्रयोग कर बच्चों की पढ़ने के प्रति रुचि को जगाने का प्रयास कर रही थी। इसी बीच मुझे बुनियादी भाषा शिक्षण की एक कार्यशाला में प्रतिभाग करने का अवसर मिला। इसमें हमने भाषा सीखने में बातचीत का महत्त्व, दीवार पत्रिका, बाल डायरी, पढ़ने की घण्टी, बाल अख़बार और आज की बात जैसे महत्त्वपूर्ण विचारों और गतिविधियों पर चर्चा कर समझ बनाने का प्रयास किया था। इससे मुझे समझ में आया कि इन तमाम समस्याओं की जड़ में हमारी अरुचिकर शिक्षण प्रक्रिया ही है, जिसमें पाठ्यपुस्तक से रटकर याद किए हुए प्रश्नों के शीघ्र उत्तर देने को प्राथमिकता दी जाती है। इस कारण बच्चों का शिक्षण से जुड़ाव कम ही होता है। इसी बात ने मुझे सोचने को प्रेरित किया कि क्यों न पढ़ने-लिखने की प्रक्रियाओं में पाठ्यपुस्तकों के साथ-साथ स्थानीय सन्दर्भों और अन्य बाल पुस्तिकाओं का सहारा भी लिया जाए। इनपर बच्चों के साथ चर्चा-परिचर्चा करते हुए कुछ लिखना-पढ़ना और लिखे-पढ़े या रचे हुए को दीवार पत्रिका के रूप में संयोजित कर सामूहिक वाचन का अभ्यास करवाया जाए, तो वे पढ़ने-लिखने में रुचि ले सकेंगे।

दीवार पत्रिका बच्चों के मन की स्वतंत्र अभिव्यक्तियों, सृजनात्मकता या कल्पनाओं को निखारने का एक सार्थक माध्यम है। इसमें वे स्वयं अपने सन्दर्भों, पाठ्यपुस्तकों या अन्य किताबों से जुड़ी अपनी कल्पनाओं को विविध स्व-रचित रचनाओं के माध्यम से अभिव्यक्त करते हैं। दीवार पत्रिका में सामान्यतः चित्रों का संकलन, चित्र कथा, कविता, शब्द-जाल, वर्ग पहेली, मुहावरे, चुटकुले, लोकगीत, लोककथा, निबन्ध, पत्र, गणित पहेली, स्थानीय घटनाओं



का वर्णन आदि होते हैं। इन रचनाओं को एक कैलेंडरनुमा चार्ट पर संयोजित कर विद्यालय में कक्षाओं की दीवार पर लगाते हैं। उसे इस प्रकार लगाया जाता है कि आसानी से एक जगह से दूसरी जगह ले जाया जा सके। बच्चों द्वारा इसका उपयोग प्रार्थना सभा के दौरान सामूहिक वाचन, प्रतिभा दिवस, छुट्टी के समय एवं स्वैच्छिक रूप से किया जाता है।

शिक्षा में सीखने-सिखाने के परम्परागत तौर-तरीक़े एवं परीक्षा की चली आ रही परिपाटी बच्चों को रटने की ओर धकेलती है, जिससे स्वयं सोचने-विचारने, पढ़ने-लिखने या अभिव्यक्ति के मौक़े उनके पास कम ही होते हैं। ऐसे में दीवार पत्रिका उनकी कल्पनाशीलता, मौलिक अभिव्यक्ति एवं सृजनात्मकता को उभारने का एक बढ़िया माध्यम हो सकती है, जिसमें भाषाई कौशल जैसे– सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना आदि का परिष्कृत होना निहित ही है। इस प्रकार बच्चों में भाषाई कौशलों को निखारने हेतु दीवार पत्रिका एक सशक्त माध्यम महसूस होता है जिसके लिए मैंने कुछ बातें तय कीं जो इस प्रकार हैं :

उद्देश्य :

- बच्चों में सृजनात्मकता के साथ निरन्तर पढ़ने-लिखने की आदत का विकास करना।
- पढ़ने-लिखने की गतिविधियों में स्थानीय सन्दर्भों को आधार बनाना ताकि बच्चों को पढ़ना-लिखना एक अलग कार्य न लगे और वे इसमें रुचि ले सकें।
- बच्चों के विचारों एवं भावनाओं को बातचीत की मदद से व्यक्त करवाना और साथ ही इन्हीं बातों को पढ़ना-लिखना सिखाने का आधार बनाना।
- बच्चों को पाठ्यपुस्तक, उनके द्वारा स्वरचित सामग्री और अन्य किताबों को पढ़ने के ख़ूब मौक़े देना और साथ ही पढ़े हुए पर उनके अनुभवों को बुलवाना एवं लिखवाना।
- बच्चों से निरन्तर पूछताछ करते रहना ताकि उनमें पढ़ने-लिखने के प्रति रुचि बनी रहे और कुछ नया करने की ओर बढ़ते रहें।

दीवार पत्रिका और इसके तहत होने वाली गतिविधियाँ काम कैसे करती हैं, अब इस बात की कोशिश होनी शेष थी जिसके लिए निम्नानुसार कार्ययोजना बनाई गई :

कक्षा 1 व 2 के लिए : शुरुआती कक्षाओं में बच्चों के साथ अब कुछ हटकर काम करने की शुरुआत की गई, जिसमें शुरुआती वर्णमाला सिखाने के बजाय उनसे स्थानीय सन्दर्भों या पाठ्यपुस्तकों के चित्रों पर ख़ूब बातचीत करके, उन्हीं की बातों को लिखना और फिर पढ़ने का अभ्यास करवाना, चित्र बनाने का अभ्यास करवाना, कहानी-कविता को हाव-भाव से सुनाने व लिखने का अभ्यास करवाना और इन्हीं से विविध वर्णों, मात्राओं, शब्दों और वाक्यों को पढ़ने-लिखने का अभ्यास करवाना।

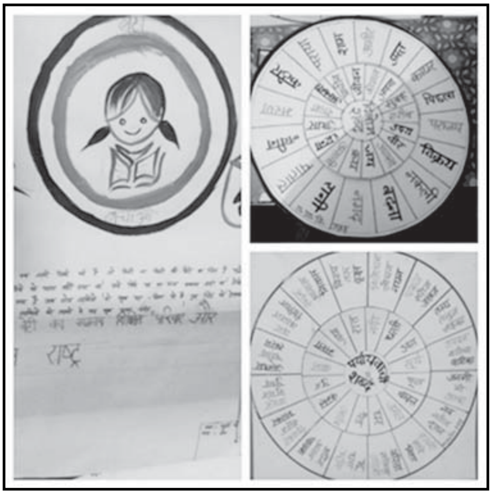
कक्षा 3, 4 व 5 के लिए : इन बच्चों के साथ कहानी-कविता को हाव-भाव से सुनाने व लिखने का अभ्यास करवाना, चित्र कहानी बनवाना, समझे हुए को लिखने का अभ्यास करवाना, सुने, देखे, सोचे हुए को लिखने हेतु प्रेरित करना, लिखे हुए से संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया

आदि की पहचान करवाना, शब्द पहेली और विविध शब्दों से वाक्य बनवाना आदि।

उपरोक्त पढ़ने-लिखने की गतिविधियों के दौरान बच्चों द्वारा निर्मित विविध प्रकार की सामग्री को माहवार दीवार पत्रिका के रूप में संयोजित करना। इस योजना पर सितम्बर से मार्च तक काम होना तय किया गया जिसके तहत पढ़ने-लिखने हेतु अभी तक की गई कुछ प्रक्रियाएँ हैं :

चित्रों पर बातचीत : पाठ्यपुस्तक एवं अन्य किताबों से बहुत सारे रंग-बिरंगे चित्रों को बातचीत का आधार बनाया गया जिनपर बहुत सारे सवालों जैसे– इसमें आपको क्या-क्या दिख रहा है, कौन-कौन दिख रहे हैं, ये क्या कर रहे होंगे, क्यों कर रहे होंगे, आदि की मदद से चित्रों को जानने-समझने का प्रयास किया गया जिससे बालमन की विविध कल्पनाओं से ऐसी कहानियों का निर्माण हुआ जिनका न कोई सार था और न कोई अन्त, पर इन कहानियों में बच्चों की कल्पनाशीलता को उजागर करने के भरपूर मौक़े थे। इन कहानियों के संकलन में एक समस्या थी कि अभी बच्चे लिखित अभिव्यक्ति नहीं कर पा रहे थे तो यह समझ में आया कि बातचीत के साथ-साथ लिखने को लेकर भी काम करना चाहिए। इस गतिविधि में बच्चों से बातचीत के बाद ख़ूब चित्र बनवाए गए। उनके द्वारा बनाई गई कहानियों को चित्रों के माध्यम से दीवार पत्रिका पर उकेरना बच्चों के लिए एक रोचक कार्य हो गया, जहाँ अब रटने के बजाय बच्चे कहानी को अच्छी तरह से समझ जाते हैं।

आज की बात : बातचीत भाषा सीखने का आधार था जिसे चर्चा के साथ-साथ लिखित रूप भी दिया जाना चाहिए और इसके लिए बच्चों को इस बात का अहसास दिलाया जाना ज़रूरी था कि हम जो कुछ देखते, सुनते, बोलते या सोचते हैं उन तमाम बातों को लिखा भी जा सकता है। इसमें 'आज की बात' गतिविधि ने चमत्कारिक काम किया। इसमें हमारे द्वारा



प्रत्येक दिन कक्षा में बच्चों के साथ ख़ूब सारी बात की जाती थी और बच्चे भी अपने बारे में ढेर सारी बातें बताते थे। इस बातचीत के दौरान किसी एक बच्चे की बात को आज की बात के रूप में मेरे द्वारा ब्लैकबोर्ड के निचले हिस्से में लिख दिया जाता था। अब इस लिखित बात को पहले बच्चे मेरे साथ पढ़ते थे और उसके बाद प्रत्येक बच्चे को उसे पढ़ने का मौक़ा दिया जाता था। उसके बाद सभी बच्चे इस आज की बात को अपनी-अपनी नोट बुक पर लिखते थे। इस प्रकार प्रत्येक दिन, प्रत्येक बच्चा अपनी बात बोलता था। और उनमें से बदल-बदल कर बच्चों के द्वारा कही गई बातों को आज की बात के रूप में लिखा और पढ़ा जाता था।

इस आज की बात को दिनभर में सात-आठ बार दोहराया जाता है और छुट्टी के समय भी बच्चे आज की बात को दोहराते हुए अपने-अपने घर की ओर जाते हैं। दूसरे दिन प्रार्थना सभा में भी उस वाक्य को दोहराया जाता है जिससे अधिकांश बच्चे उस वाक्य को लिखना व पढ़ना सीख जाते हैं। जैसे आज की बात में एक वाक्य था– "आज मैं सो नहीं पाया"। इस वाक्य को जब बच्चों ने पढ़ने-लिखने में दोहराया तो उन्होंने बहुत सारे वर्ण जैसे अ, ज, स, न, ह, प, और य के साथ-साथ आ, ओ, ई और ऐ की मात्रा को भी बोलना और लिखना सीखा। इस प्रकार जब बच्चे इन शब्दों को

पाठ्यपुस्तक या किसी अन्य किताब में देखते हैं तो वे इन शब्दों को पहचान पाते हैं। यह गतिविधि सचमुच में बड़ी कारगर साबित हुई, इससे बच्चे आत्मविश्वास के साथ अपनी बात को लिखने-बोलने और पढ़ने के लिए तत्पर हुए और साथ ही पढ़ने-लिखने में रुचि भी दिखाने लगे। यह भी देखने में आया कि इस गतिविधि में बच्चा अपने-आप को एक अध्यापक के रूप में भी महसूस कर रहा होता है क्योंकि उसकी बात को आज सभी बच्चों ने लिखा और पढ़ा है और वह स्वयं क्यों न लिखे, यह तो उसकी अपनी बात जो ठहरी। इस भाव ने बच्चों को लिखने हेतु प्रेरित किया। इस गतिविधि में बच्चों ने अपनी बात लिखने के साथ चित्र भी बनाए, जिन्हें दीवार पत्रिका के माध्यम से अन्य बच्चों को भी पढ़वाया गया।

पढ़ने की घण्टी : बच्चों को पढ़ने-लिखने के विशेष अवसर देना

कक्षा 1 व 2 के बच्चों के साथ उपरोक्त गतिविधियों के अलावा हमारे विद्यालय में उपलब्ध विविध रंग-बिरंगे चित्रों की किताबें पढ़ने को दी गईं, इन किताबों पर बातचीत में बच्चों ने ख़ूब रुचि दिखाई और एक आश्चर्यजनक अन्तर देखने में आया कि इन किताबों में बने चित्रों से, बच्चे बहुत ही सहज तरीक़े से कहानी की ओर बढ़ पा रहे थे। किताब पढ़ने की इस प्रक्रिया में



कक्षा एक के बच्चे भी मिला-मिला कर पढ़ने का प्रयास कर रहे हैं जो मेरे लिए एक सुखद अनुभव है। इस प्रकार लगातार पढ़ने व लिखने के अभ्यासों से बच्चों ने विविध प्रकार के चित्र बनाए, वाक्य व शब्द भी लिखे जिन्हें दीवार पत्रिका में स्थान मिला।

कक्षा 3 से 5 तक के बच्चों में एक आम समस्या थी कि बच्चे पाठ्यपुस्तक पढ़ तो लेते हैं पर उन्हें समझकर साझा करने में दिक़्क़त थी। जैसे– उन्हें पढ़ने को बोले जाने पर वे पढ़ तो लेते, पर जब उन्हें अपनी समझ को साझा करने को बोला जाता तो वे सहज महसूस नहीं करते थे। बच्चे समझ के साथ पढ़ें, इसके लिए पढ़ने की घण्टी के दौरान बच्चों को पहले-पहल विविध चित्र दिए गए और इन चित्रों पर बातचीत कर उनसे वाक्य लिखवाए गए। इन्हें मिलाकर बाद में कहानी के रूप में लिखा गया और इन्हीं वाक्यों से कुछ शब्दों को लेकर तुकबन्दी के माध्यम से कविता निर्माण का अभ्यास किया गया। अब बच्चों को उन्हीं के द्वारा रचित कहानियों और कविताओं को पढ़कर साझा करने को कहा गया तो पाया कि अब वे सहजता से कर पा रहे हैं। हालाँकि शुरुआती दौर में उन्हें कहानी और चित्रों के मध्य सम्बन्ध बैठाने में दिक़्क़तें आईं, पर निरन्तर अभ्यास से उन्हें मदद मिली और आज बच्चे विविध कहानी और कविताओं का निर्माण कर पा रहे हैं जिन्हें वे दीवार पत्रिका के माध्यम से प्रस्तुत कर रहे हैं।

इसी तरह पढ़ने की घण्टी के दौरान बच्चों को अपनी पसन्द की किताबें दी गईं और उनमें दिए चित्रों पर बातचीत से यह मदद मिली कि बच्चे धीरे-धीरे उसमें लिखी सामग्री को समझ के साथ पढ़ते हुए उनपर अपने स्वच्छन्द विचारों को चित्रों, शब्दों और वाक्यों में लिखने लगे हैं।

व्याकरण की समझ : पढ़ने की घण्टी बजते ही अब बच्चे किताबों को पढ़ने के लिए काफ़ी उत्सुक हैं और वे इन किताबों से बहुत प्रकार की गतिविधियों के माध्यम से विविध प्रकार के विलोम शब्द, पर्यायवाची शब्द, मुहावरे, संज्ञा,

सर्वनाम, क्रिया व विशेषण आदि के माध्यम से शब्द-जाल, वर्ग पहेली, शब्द वृक्ष जैसी सामग्री तैयार करते हैं, जिसे दीवार पत्रिका के माध्यम से प्रदर्शित किया जाता है।

सुने, देखे और सोचे हुए को लिखना : बच्चों में लिखने के प्रति समझ विकसित करने के लिए उन्हें डायरी लिखने के लिए प्रेरित किया गया, जिसमें वे अपनी दिनचर्या के साथ-साथ स्थानीय घटनाओं या त्योहारों के विवरण एवं अपने मन की बात लिखते हैं और फिर कक्षा में अपनी डायरी के अंश पढ़कर भी सुनाते हैं। इसके अलावा बच्चों ने अपने यात्रा संस्मरणों को भी लिखा।

हमारी दीवार पत्रिका : उपरोक्त पढ़ने-लिखने की प्रक्रियाओं के दौरान हमारे बच्चों द्वारा बहुत सारी सामग्री जैसे— विविध प्रकार की कहानियाँ, कविताएँ, नाना प्रकार के चित्र, शब्द एवं वाक्यों का संकलन, चित्र कहानियाँ, शब्द-जाल, शब्द पहेलियाँ, वर्ण-मात्रा जाल, शब्द वृक्ष, डायरी के अंश, यात्रा संस्मरण आदि तैयार की जाती है। यही सामग्री हम एकत्र कर रखते हैं जिसे महीने के अन्त में बच्चों के साथ मिलकर कैलेंडरनुमा चार्ट में संयोजित कर अपनी मासिक दीवार पत्रिका के रूप में तैयार करते हैं। इस पूरे कार्य को करने में हमारा प्रत्येक बच्चा ख़ुश एवं उत्साहित रहता है। दीवार पत्रिका में अपने द्वारा लिखे-पढ़े और रचे हुए लेखों को देखकर बच्चे प्रोत्साहित होते हैं और उसे सबके सामने प्रस्तुत करने हेतु लालायित भी रहते हैं। इस प्रकार दीवार पत्रिका का सामूहिक वाचन प्रार्थना सभा, छुट्टी के समय या प्रतिभा दिवस के दिन सभी बच्चों के सामने किया जाता है और उसके बाद इसे कक्षा-कक्षों में प्रदर्शित कर दिया जाता है जो कि कक्षा शिक्षण के दौरान बहुत सारी चीज़ों की पुनरावृत्ति में मददगार होती है और बच्चे भी समय-समय पर इसे पढ़ते रहते हैं।

कुछ चुनौतियाँ : इन तमाम प्रक्रियाओं को करते हुए कुछ चुनौतियाँ भी महसूस हुईं जो इस प्रकार हैं :

- शिक्षण के अलावा विद्यालय एवं विभाग के अन्य कार्यों में व्यस्त होने के कारण बच्चों के साथ गतिविधि-आधारित शिक्षण में निरन्तरता बनाए रखने में परेशानी होती है।
- बच्चों की अनुपस्थिति : अगर कोई बच्चा एक-दो दिन विद्यालय नहीं आता है, तो विगत दिनों में सीखी हुई चीज़ों को लेकर उसके साथ पुनः काम करना पड़ता है जो आगे बढ़ने में अवरोध पैदा करता है।
- कक्षा 1 में आने वाले बच्चों में विद्यालय के प्रति एक प्रकार का भय उन्हें गतिविधियों में शामिल नहीं होने देता।
- कक्षा एक में बच्चों को हिन्दी बोलने का अभ्यास भी कम ही होता है जिस कारण वे अपनी बात को खुलकर रखने में हिचकिचाते हैं।

इन चुनौतियों के साथ-साथ हमारा प्रयास रहा कि हम बच्चों के साथ उनकी भाषा में अधिक-से-अधिक बातचीत करते रहें ताकि वे विद्यालय में सहज महसूस करें। इसका परिणाम यह हुआ कि बच्चों का मेरे साथ बेहतर तालमेल बन पाया। अन्य कार्यों में व्यस्तता के साथ-साथ जो भी समय मिल पाया मैंने शिक्षण गतिविधियों में निरन्तरता लाने का प्रयास किया, जो सफल भी रहा।

बच्चों में जो बदलाव मैं महसूस कर पाई : इन गतिविधियों से बहुत सारे बदलाव मुझे बच्चों में दिखे जो इस प्रकार हैं :

- बच्चे लिखते-पढ़ते कुछ-न-कुछ (गीत, कहानी या चित्र) बना रहे होते हैं और अपनी दीवार पत्रिका को बनाने का इन्तज़ार करते हैं। इससे मुझे लगता है कि बच्चों में पढ़ने-लिखने के प्रति रुचि तो बढ़ी है।

- बच्चों में दूसरों को सुनने और अपनी बात को रखने के प्रति आत्मविश्वास में वृद्धि हुई है। इसका असर दीवार पत्रिका के सामूहिक वाचन के दौरान दिखा, जब वे इसे पढ़कर समझा रहे थे।
- बच्चे ख़ुद की कल्पना को उनके द्वारा बनाए गए चित्रों, कविताओं और कहानियों में दिखा पा रहे हैं।
- बच्चे सुने, देखे और महसूस किए अनुभवों को लिख पा रहे हैं, यह बात उनके डायरी लेखन और यात्रा वृत्तान्त से समझ में आती है।
- अपने अनुभवों को एक दूसरे से साझा करने की आदत विकसित हुई है, इस बात का अन्दाज़ा मुझे उनकी चर्चा-परिचर्चा से हुआ।

इन तमाम गतिविधियों से मुझे यह समझ में आ रहा है कि बच्चों के द्वारा रचित चीज़ों को सम्मान देने से बच्चों में पढ़ने-लिखने के प्रति रुचि बढ़ती है। दीवार पत्रिका इसके लिए एक बढ़िया माध्यम है जो विद्यालय में पढ़ने-लिखने की संस्कृति को बढ़ावा देने हेतु मददगार है। अपने नन्हे-मुन्ने बच्चों के हाथों से बनी दीवार पत्रिका को जब मैं दीवार पर मुस्कुराते हुए देखती हूँ तो मैं अपने बचपन की *नंदन* और *चम्पक* के किरदारों में खो जाती हूँ।

संगीता फरासी राजकीय प्राथमिक विद्यालय गहड़, ब्लॉक खिर्सू, श्रीनगर जिला पौड़ी गढ़वाल में शिक्षिका हैं। उनकी शिक्षा में होने वाले नवाचारों को अपने शिक्षण कार्य में अपनाने में गहरी दिलचस्पी है। वे शिक्षा से वंचित बच्चों को शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ने के लिए अनवरत प्रयास करती रहती हैं।

सम्पर्क : spharasi333@gmail.com